International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 16 Issue 02, February 2026,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नारी शिक्षा और वैचारिक स्वतंत्रता पर साहित्य का प्रभाव

चेतना विजय, सहायक आचार्य,
राजकीय महाविद्यालय परबतसर,जिला-डीडवाना- कुचामन(राजस्थान)

शोध सार

परम्परागत समाज और साहित्य में स्त्री की सामाजिक स्थिति के केन्द्र मे उसकी दैहिक संरचना को रखा जाता रहा है। दैहिकता को शील, नैतिकता और चरित्र से जोडा जाता है। उसे ममतामयी, करूणामयी, कोमलांगी, बलिदानी बताकर उसकी स्वाभाविक प्रकृति और आकांक्षाओं को उससे छीना जाता है। भारतीय सस्कृति की समझ स्त्री को महान बनाती है परन्तु स्त्री विमर्श उसे समान बनाने की दिशा में प्रयासरत है। स्त्री विमर्श गहरे अर्थों में उपरोक्त सभी संस्थाओं, संगठनो विचारों और मानसिकता के खिलाफ एक सांस्कृतिक आन्दोलन है। भारतीय हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श को यथोचित स्थान दिया है।

बीज शब्द –स्त्री विमर्श, हिन्दी साहित्य, नारीवादी आन्दोलन।

मूल आलेख

भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही स्त्री आदर का प्रतीक मानी जाती है। हिन्दू धर्म में स्त्री को देवी का स्थान प्राप्त है। ऋग्वेदकालीन स्त्रियाँ विदुषी और दार्शनिक थी। वे ब्रह्मचर्य और विद्याध्ययन हेतु स्वतंत्र थी। उत्तरवैदिक काल में भी स्त्री आश्रमों में शिक्षा यज्ञों में भाग लेती थी। वे धर्म व दर्शन में निपुण थी। शतपथ ब्राह्मण से ज्ञात होता है कि कर्त्तव्य निर्वाह में स्त्री–पुरुष समकक्षता थी। उपनिषद् काल में स्त्रियाँ दर्शन के क्षेत्र में अग्रणी थी। पुराणों में स्त्री पुरुष के समान शिक्षा की अधिकारिणी थी। वे आध्यात्म योग व तपस्या में लीन रहती थी। स्त्री, ईश्वर सृजित वह अनुपमेय अर्चा है, जो अपने में विशिष्ट रंग और स्वर लेकर धरती पर जन्मी है। उसकी जैसी संवेदनशील और भावुक कृति संसार में कोई नहीं होगी। हिन्दी व्याकरण में शब्द के अंत में आए 'ई' स्त्रीलिंगवाची शब्द– स्त्री, प्रकृति, शक्ति और बुद्धि। ये चारों स्त्री को व्याख्यायित करने में अद्भुत सिद्ध हुए है– स्त्री, करुणा की प्रतिमूर्ति, प्रकृति जैसी अभेद प्रवृत्ति, निर्माण की शक्ति और विवेकशील बुद्धि से सम्पन्न सृष्टि का अर्द्धखण्ड है, जिसके बिना जीवन सम्भव नहीं है।[1] स्त्री जीवन के यथार्थ को उचित मायनो में समझने हेतु तथा निम्न परिस्थितियों का अध्ययन करने हेतु कुछ बिन्दुओं पर प्रकाश डालना आवश्यक है जो साहित्यिक और सामाजिक दृष्टि से आज भी स्त्री जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। स्त्री विमर्श को समझने हेतु आवश्यक है विमर्श को समझना। विमर्श शब्द का अर्थ– हिन्दी शब्दकोश में 'विमर्श' का अर्थ– "विचार, विवेचन,परीक्षण, समीक्षा, तर्क।" वर्तमान सन्दर्भ में रोहिणी अग्रवाल विमर्श को "जीवन्त बहस" मानती है। विमर्श शब्द की व्याख्या–"यहाँ 'विमर्श' शब्द का अर्थ होता है, अभिव्यक्ति के उन तत्वों या पहलुओं की संरचना जो कुल जोड़ से भी परे जाकर कोई खास अर्थ देने की क्षमता रखते हो।"[2] इस प्रकार विमर्श का अर्थ हुआ, किसी समस्या पर एक निश्चित दिशा में विचार न करके उससे संबंधित विभिन्न दृष्टिकोणों, मानसिकताओं और विचारों का समग्र अध्ययन करना।

स्त्री विमर्श से तात्पर्य– स्त्री विमर्श एक विचारधारा, एक माध्यम है, जिसमें स्त्री के हितों पर विचार कर अपनी बात को रखा जाता है। रोहिणी अग्रवाल के शब्दों में "स्त्री को केन्द्र में रखकर समाज, संस्कृति, परम्परा एवं इतिहास का पुनरीक्षण करते हुए स्त्री की स्थिति पर

Vol. 16 Issue 02, February 2026,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मानवीय दृष्टि से विचार करने की अनवरत प्रक्रिया।"इस प्रकार स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि स्त्री विमर्श किसी एक परिस्थिति का पक्षधर नहीं है। यह पक्षधर है स्त्री के उस अतीत का जो उसने शोषण में भोगा है, उस वर्तमान का जो लैंगिक भेद से बुना है, उस भविष्य का जिसकी पीड़ा आने वाली पीढी है। ग्रामीण स्त्री पति से प्रेम पाकर अच्छे दाम्पत्य जीवन, अच्छा ओढ़ना–पहनना, खाना–पीना और अच्छे पारिवारिक जीवन जीने को स्त्री मुक्ति समझती है। पर क्या स्त्री मुक्ति की यह परिकल्पना सही है ? इसी कारण स्त्री मुक्ति का चिंतन गलत दिशा में चला गया है।[3] विवाह न करना, अच्छा दाम्पत्य जीवन जीना, आत्मनिर्भरता क्या यहीं स्त्री मुक्ति है ? क्या इससे पुरुषप्रधान समाज की मानसिकता से मुक्ति मिलेगी ? नहीं। जिस तरह लोहा लोहे को और जहर जहर को काटता है, उसी प्रकार पुरुष प्रधान समाज से मानसिकता से मुक्ति उसी मानसिकता के साथ रहकर दूर की जा सकती है। स्त्री चेतना का अर्थ स्त्री में स्थापित चेतना या जागरूक होने की शक्ति। स्वतंत्रता के पश्चात् से ही स्त्री सशक्तिकरण हेतु कई प्रयास किए गए। जिससे स्त्री चेतना के नए पदचिह्न हर क्षेत्र में दिखाई देने लगे। 'अपने स्वत्व से जुड़ी तमाम समस्याओं के प्रति आज की स्त्री सचेत है। स्त्री से जुड़े बिंदुओं की बारीकी के साथ तीव्र पहचान स्त्री ही कर सकती है। स्त्री विमर्श का मतलब स्त्री पुरुष की स्वार्थ की दौड़ नहीं है, स्त्री की स्वयं की आलोचना भी है।"[4]

स्त्री जागरूक हुई और इस जागरूकता को प्रसारित करने में महिला लेखन का बहुत बड़ा प्रभाव रहा है। निखरे व्यक्तित्व और स्व जागरूकता के साथ बड़ी संख्या में स्त्री लेखिकाएं साहित्य में उतरी। इन लेखिकाओं के स्त्री पात्र अपने अस्तित्व हेतु चैतन्य हो परम्परागत मूल्यों और पुरुष प्रधान समाज की कुत्सित मान्यताओं से संघर्ष कर रहे है। मैत्रेयी पुष्पा के शब्दों में "नारीवाद ही स्त्री विमर्श है। नारी की यथार्थ स्थिति के बारे चर्चा करना ही स्त्री विमर्श है।" स्त्री विमर्श स्त्री के अस्तित्व की खोज है तथा नारी अस्मिता का उद्देश्य अस्तित्व को आधार बनाकर स्त्री को चेतना से युक्त बना व्यक्तिगत स्वतंत्रता का निर्माण करना है।[5] ये सभी चिन्तन समकालीन परिवेश में एक भिन्न परिस्थिति को लेकर उपजे है, जिसमें स्त्री पुरुष से प्रतिस्पर्धा करके आगे नहीं जाना चाहती है, वरन् समकक्षता को अपनाना चाहती है। उपरोक्त विवेचन से ज्ञात होता है की स्त्री विमर्श, स्त्री मुक्ति, स्त्री चेतना, नारी अस्मिता और नारीवाद, चिन्तन के आधार है, परन्तु ये चिन्तन कल्पना जनित नहीं है। यह वह चिन्तन नहीं है जिसे पढ़–सुनकर मात्र सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाए बल्कि यह चिन्तन यथार्थ पर आधारित है, जिससे वास्तव में समाज को जागृत किया जा सकें।[6] स्त्रीवाद 'Feminism' का अर्थ– "ऐसा विश्वास या सिद्धान्त कि स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार और अवसर प्राप्त होने चाहिए।" नारीवादी अवधारणा अपने भीतर समाज में पुरुष का वर्चस्व और स्त्री की गुलामी का खंडन करती है। भारतीय विचारधारा में नारीवाद नारी आंदोलनों के फलस्वरूप विभिन्न प्रतिक्रियाओं का परिणाम है। महादेवी वर्मा– "भविष्य में भारतीय समाज की क्या रूपरेखा हो? उसमें नारी की कैसी स्थिति हो? उसके अधिकारों की क्या सीमा हो? आदि समस्याओं का समाधान आज की जाग्रत और शिक्षित नारी पर निर्भर है.....वह विरोध को ही चरम लक्ष्य मान लें और पुरुष से समझौते के प्रश्न को ही पराजय का पर्याय समझ लें तो जीवन की व्यवस्था अनिश्चित और विकास का क्रम शिथिल होता जाएगा।" [7] महादेवी वर्मा स्त्री की उस दशा को उजागर करना चाहती है जब स्त्री के लिए अन्य अधिकारों की बात ही क्या की जाए? जब उसे जीने के अधिकारों से ही वंचित कर दिया गया था। रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में– "पुरुष अपने अहम् के वशीभूत ही स्त्री के वास्तविक स्वरूप से अनभिज्ञ रहा है, और आज तक यदि पुरुष नारी को समझ लेगा तो समाज की सारी विषमताओं का स्वतः ही निराकरण हो जाएगा, आवश्यकता

उसे समझने और महसूस करने की है।" दिनकर पुरुष के झूठे पौरुष को केवल स्त्री पर हावी होना मानते है, उसका पुरुषार्थ मात्र स्त्री को परतंत्र बना उस पर अधिकार करने में निहित है। मैत्रेयी पुष्पा कहे अनुसार– "नारीवाद ही स्त्री विमर्श है। नारी की यथार्थ स्थिति के बारे में चर्चा करना ही स्त्री विमर्श है।" मैत्रेयी पुष्पा नारीवाद और स्त्री विमर्श को चिन्तन का ही एक आयाम मानती है और स्त्री से जुड़े इस चिन्तन को यथार्थ से जोड़ती है। प्रभा खेतान के अनुसार– "नारीवाद न मार्क्सवाद है और न पूंजीवाद। स्त्री हर जगह है, हर वाद में है, फैलाव में है, मगर संस्कृति के विस्तृत फलक पर आज भी वह वस्तुकरण की शिकार है, वस्तुकरण की इस पारंपरिक प्रक्रिया को पुरुष दृष्टि से नहीं बल्कि स्त्री–दृष्टि से देखने और समझने की जरूरत है।"[8]प्रभा खेतान स्त्री की वर्तमान स्थिति की जिम्मेदार स्वयं स्त्री को मानती है। भारतीय चिन्तक स्त्रीवाद के माध्यम से स्त्री और पुरुष के मध्य अन्तर की गहराई को पाटने का प्रयास कर रहे है। इसलिए स्त्री को अब अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी होगी जिस्म के जिरह को त्यागकर अपनी पहचान मस्तिष्क से बनानी होगी। क्योंकि देह ने वस्तु के रूप में स्त्री को प्रदर्शनी और भोग्या बनाया है। वस्तुकरण की इस प्रताड़ना के साथ, अपनी पुरुषसत्ता से ग्रस्त मानसिकता को भी स्त्री को अपने अन्तर से निकालना होगा, तभी वह अपने मूल लक्ष्य तक पहुंच पाएगी। भारतीय हिन्दी साहित्य और स्त्री विमर्श बौद्ध कालीन थेरीगाथा पालि में रचित 522 गाथाएं है। थेरीगाथा खुद्दक निकाय के 15 ग्रंथों में से एक है, जिसके अन्तर्गत बौद्ध भिक्षुणिओ ं द्वारा उनके अनुभवो ं और मनःस्थिति को अभिव्यक्त किया गया है। प्रव्रज्या प्राप्त स्त्रियों को थेरी कहा गया तथा उनके जीवनानुभवो ं द्वारा तत्कालीन स्त्री की स्थिति को गीति शैली में आत्म अभिव्यंजनात्मकता के माध्यम से जिन कविताओं में उतारा गया उन्हें गाथा कहा गया। इस प्रकार ये गाथाएं थेरी गाथाओं के नाम से प्रसिद्ध है। इन थेरियों द्वारा आशावादी दृष्टिकोण, स्वच्छंद विचारों और स्वतंत्र वक्ता के रूप में अपने हृदय के उद्गारों को अभिव्यक्त किया। "ये परिव्राजिकाएं स्त्री स्वतंत्रता की प्रारम्भिक वक्ता थी।"[9] इसी क्रम में आठवीं शताब्दी में दक्षिण से जो भक्ति की धारा आलवार संतों द्वारा प्रवाहित की गई उन्हीं 12 आलवार संतों में एक मात्र महिला संत आंदाल थी। जिन्होंने नारी जाति को आध्यात्मिक भक्ति की ओर अग्रसर करने का कार्य किया। बारहवीं शताब्दी में कर्नाटक की कन्नड़ कवयित्री अक्का महादेवी पुरुष सत्ता के खिलाफ आवाज बुलन्द करती हुई शिव भक्ति की ओर अग्रसर हुई। उनके द्वारा पति के किए अत्याचारों का विरोध कर, स्त्री की परतंत्रता, उसके अस्तित्व की खोज हेतु विद्रोह किया गया। इन्होंने कन्नड़ कविता में 430 वचन कहें, जो कन्नड़ साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते है। मराठी संत मुक्ताबाई अद्वैत और योगमार्ग की ज्ञाता थी। ज्ञान और भक्ति उनमें उच्च कोटी की थी। स्त्री पुरुष और व्यक्तिभेद की भावना को वे सांसारिक मानती थी ज्ञान और भक्ति में इस भेद को नकारती है। मराठी साहित्य में इनकी उलटबासियां प्रमुख है। जनाबाई शूद्र जाति की भक्त कवयित्री थी, जिनकी बानी को अभंग कहा जाता है। इन अभंगों में स्त्री की उपेक्षित छवि को दूर करने और आत्मानुभूति का स्वर देखने को मिलता है।[10] सोलहवी ं शताब्दी में मीराबाई पुरुष प्रधान समाज की परंपराओं की बेड़ियों को तोड़कर भगवद् भक्ति और प्रेम में मग्न रही। स्त्री की स्वतंत्रता और अस्तित्व की लड़ाई में मीरा तत्कालीन समाज की संकीर्ण अव्यवस्था और पुरुष शक्ति के विरोध में अकेली संघर्षरत खड़ी रही। सन् 1882 में ताराबाई शिंदे द्वारा मराठी में 'स्त्री पुरुष तुलना' लिखकर पुरुष सत्ता के विरोध में अपनी आवाज उठाई। [11]इसी समय पंडिता रमाबाई ने स्त्री धर्म नीति लिखकर स्त्री को चैतन्य रहने के लिए तटस्थ किया और साथ ही स्त्री जीवन के यथार्थ को जानने का प्रयत्न भी किया। सन् 1882 में नारी चेतना को मुखरित करती और स्त्री स्वतंत्रता पर अपना पक्ष रखती हुई पुस्तक 'सीमंतनी उपदेश'

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 16 Issue 02, February 2026,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आई। इस पर किसी लेखिका का नाम न होने पर धर्मवीर भारती द्वारा सन् 1984 में इसका संपादन किया गया और लेखिका का नाम 'अज्ञात हिन्दू औरत' माना गया। स्त्री की परतंत्रता, शोषण और पीड़ा को यथार्थ और अनुभवों के आधार पर इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है। 29 अध्यायों में विभक्त यह पुस्तक आक्रामक शैली में रचित है। जिसमें स्त्री जीवन की यथार्थ कट्टरताओं की जड़ों को पोषित करने वाली और कुरीतियों के पत्तों का सृजन करने वाली ज्वलंत एवं विवादास्पद समस्याओं को बेबाक तरीके से उठाया गया। यह पुस्तक तत्कालीन परिस्थितियों में नारीवाद का प्रतिनिधित्व करते हुए खोखलें समाज की दिखावटी परम्पराओं की इमारत को हिलाने के लिए काफी थी। स्त्री सशक्तिकरण और नारी जागरण हेतु वे स्त्रियों को कहती है– "जब तक अपने ऊपर रहम न करोगी मुमकिन नहीं कि हिन्दुस्तानी तुम पर रहम करें। हमेशा इसी कैद में रही हो और रहोगी। अगर परमेश्वर भी तुम्हारी इस हालात पर रहम कर छुड़ाने आवें हरगिज़ न छुड़ा सकेगा, जब तक तुम खुद अपने जिस्म से मुरव्वत न करोगी।"[12] सन् 1882 के पश्चात् भारतीय हिन्दी साहित्य में 1942 तक एक दीर्घ मौन छाया रहा। सन् 1942 को इस खामोशी को तोड़ती हुई महादेवी वर्मा की पुस्तक 'श्रृखला की कड़ियाँ' आई जिसे स्त्री विमर्श की प्रस्तावना कहा जा सकता है। इस पुस्तक में महादेवी वर्मा स्त्री मुक्ति हेतु ऐसी कामना करती है जो न तो पुरुष का अनुसरण करें न ही पुरुष बनने का प्रयास करें। महादेवी वर्मा ने 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में स्त्री को समानता का न्याय, अस्तित्व की खोज और परम्परागत बंधनों से मुक्त करने का प्रयास किया है।[13] महादेवी जी ने अपनी सभी रचनाएं उनके आत्मानुभवों के आधार पर लिखी है। [14]इस हेतु स्त्री मन के उनके उद्गार साहित्य में परिलक्षित होना सामान्य है। संघर्षशील स्त्री की कथा को उन्होंने अपने रेखाचित्रों के माध्यम से बुना है। पुरुष की स्वतंत्रता और स्त्री की परतंत्रता को वे स्वीकार नहीं करती है और समाज के हाशिए पर खड़ी स्त्री के लिए उनकी लेखनी मौन संघर्ष प्रारम्भ कर देती है। सीमन्तनी उपदेश से लेकर श्रृंखला की कड़ियाँ तक स्त्री विमर्श की ठोस अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने वाली कोई अन्य पुस्तक नहीं मिलती। इस बीच सुभद्रा कुमारी चौहान की स्त्री ओजस्विता से पूरित कविता साहित्य में आई।[15] इनके तीन कहानी संग्रह बिखरे मोती (सन् 1932), उन्मादिनी (सन् 1934) और सीधे–साधे चित्र (सन् 1947) में प्रकाशित हुए, जिनकी अधिकतर कहानियाँ नारी विमर्श पर आधारित थी। जिनके स्त्री पात्र तत्कालीन स्त्री जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करते थे। निष्कर्ष हिन्दी साहित्य ने नारी जीवन की अनेक बातों को ईमानदारी से चित्रित किया है। साहित्यकारों ने स्त्री जीवन को बदलते परिवेश में उसकी बदलती चेतना के साथ अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। समकालीन महिला लेखिकाओं ने नारी मन की ग्रंथियों को बडी ईमानदारी से खोला है और यह दिखाया है कि वे अब जाग चुकी है वे किसी भी हालत में अपने हक से पीछे रहने वाली नहीं है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. हरदेव बाहरी, हिंदी शब्दकोश, राजपाल एंड सन्ज, नई दिल्ली, 2015, पृ. 751 ।
2. रोहिणी अग्रवाल, साहित्य की जमीन और स्त्री मन के उच्छवास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014 पृ. 11।
3. अभयकुमार दुबे, आधुनिकता के आईने में दलित, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014 पृ. 413।
4. रोहिणी अग्रवाल, साहित्य की जमीन और स्त्री मन के उच्छवास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014 पृ. 11 ।

5. महादेवी वर्मा, शृ ंखला की कड़िया, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद 2001 पृ. 22 ।
6. मृणाल पाण्डे, परिधि पर स्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011 पृ. 9 ।
7. डा. के.एम.मालती, स्त्री विमर्श–भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2012 पृ 84 ।
8. हंस पत्रिका, (सं) राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, अक्टूबर 1996 पृ. 75 ।
9. डॉ. सुरेश कुमार व डॉ. रामनाथ सहाय, अंग्रेजी–अंग्रेजी–हिंदी शब्दकोश, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 2008 पृ 437 ।
10. महादेवी वर्मा, आधुनिक नारी–उसकी स्थिति पर एक दृष्टि शृंखला की कड़िया', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995 पृ. 45 ।
11. मधुमति पत्रिका, सं. रोहित गुप्ता, दिनकर की नारी विषयक अवधारणाएं–डॉ. सुनिता निमावत (आलेख), राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, फरवरी–मार्च 2016 पृ. 45 ।
12. मैत्रेयी पुष्पा, हंस पत्रिका, (सं) राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, अक्टूबर 1996 पृ. 75 ।
13. प्रभा खेतान, हंस पत्रिका, (सं) राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, अक्टूबर 1996 पृ. 76 ।
14. के.एम. मालती, स्त्री विमर्श–भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2017 पृ 153 ।
15. धर्मवीर भारती सं., सीमन्तनी उपदेश, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2008, पृ.112 ।

❖